अध्याय -1

मॉरीशस का इतिहास:

किसी भी देश के इतिहास को जाने बिना उसके वतमान को नहीं समझा जा सकता। हिन्द महासागर का लघु द्वीप मॉरीशस लगभग 500 वर्षों से आबाद है। यह देश उपनिवेश होने की पीड़ा झेलते हुआ। 12 माच 1968 को स्वतंत्र हुआ और सन् 1991 म इसे राष्ट्रकुल के अंतगत गणराज्य घोषित किया गया। मॉरीशस के मूल निवासियों म फ्रांसीसी उद्योगपति, अंग्रेज अधिकारी गण, अफ्रीकी दास, भारतीय गिरमिटिया मजदूर और चीनी अप्रवासियों की गिनती होती है। आज का मॉरीशस इन्हीं की संतानों की कमभूमि है। प्रसिद्ध अंग्रेज दाशनिक एवं निबंधकार फ्रांसीसी बेकन ने कहा है कि- "इतिहास मनुष्य को ज्ञान वान बनाता है।"

मॉरीशस का इतिहास बहत पुराना नहीं है। लगभग 400 वर्षों से डच, फ्च तथा अंग्रेजी म लिखा जाता रहा है। गिने चुने लोगों ने हिंदी म इतिहास लिखा। प्रहलाद रामशरण ने, पं.आत्माराम विश्वनाथ, डॉ. किसून सिंह हजारी सिंह, ओगुस्त तुस तथा पेट्रीक जोजेफ ब्रानवेल जैसे इतिहासकारों के कार्यों को आगे बढ़ाया है।

मॉरीशस के अन्वेषण का सवप्रथम और प्रभावित तिथि सन1505 है। भारतीय संशोधन के आधार पर यह माना गया था कि उस समय यह द्वीप जन शून्य था। "जब आय पूवकाल म द्रविड नाविका ने इस द्वीप म पांव रखे थे। यह भी कहा जाता है कि अपने महान जागरण काल के दौरान ईसवी सन् का प्रारम्भिक शताब्दिया म भारत तथा लाल-सागर के बीच आते-आते अरबा का नजर भी इस द्वीप पर पड़ी थी।" (1) मॉरीशस का नाम अरबा ने इस द्वीप का नाम 'दीना अरोबी' रखा, जिसका अथ है- 'रूपया का द्वीप'। उसके पश्चात सन1510 के आसपास पुतगाली आये। उस समय के प्रथानुसार जहाज के कप्तान ने अपने नाम के आधार पर ही द्वीप का नामकरण किया। इसलिए मॉरीशस का पहला नाम 'डोमिंगा फरनांडज' रखा गया था।" (2) "पुतगालिया ने 'डोडो' पक्षी के आधिक्य को देखकर, इस द्वीप का नाम राजहंसा का द्वीप रखा"(3) इस द्वीप पर ज्यादा लाभ नहा मिलने से साढ़े आठ दशक तक रहने के पश्चात पुतगाली लोग इस द्वीप को छोड़कर चले गये।

पुतगालिया के जाने के बाद सन1598 ई. म डचा का आगमन हआ। इन्हाने अपने देश के राजकुमार के नाम पर इस द्वीप का नाम 'मॉरिश ऑव नासो' रखा।" (4) द्वीप को बसाने के लिए सन् 1638-1658 और सन् -1664-1710 ई. म दो बार प्रयास किये जाने के बाद डचा ने इसे बसाने का इरादा छोड़ दिया।" (5) (Encyclopedia Britannicas- Vol-11, page No. 715) डचा के पास द्वीप को बसाने का योजनाएं था, पर बार-बार तूफाना के आने, समुद्री लुटेरा तथा चुहा के उपद्रवा के कारण इन्ह आथिक हानी उठानी पड़ी। उपद्रवा एवं आतंका के साथ ही सन 1712 ई. म प्लेग के प्रकोप के कारण, ये डच इस द्वीप को छोड़कर चले गए| वहां केवल कुछ दास रह गये।

डचा के चले जाने के बाद सन् 1715 ई. म फ्रांसीसिया का इस द्वीप म आगमन हआ था। फ्रांसीसिया ने इस द्वीप का नाम बदलकर 'इल द फ्रांस' कर दिया। इस द्वीप के प्रति उनके आकषण के कई कारणा म, द्वीप का सामरिक महत्व अधिक उपयोगी था" (6) जब देखा तो "जहाज का मरम्मत और मीठे पानी के लिए भी इस द्वीप का बंदरगाह बड़ा उपयोगी था" (7) उसके बाद फ्रांसीसिया ने इस द्वीप म खुशहाली का नांव रखी। मजदूरा का सहायता से सड़क, पुल, अस्पताल और भवना का निमाण हआ। धीरे-धीरे जनजीवन सामान्य होता हआ द्रष्टिगत होता है। "फ्रांसीसिया ने भारत म अंग्रेजा के साथ हो रहे युद्ध म मॉरीशस का उपयोग एक महत्वपूण अड्डे के रूप म किया था।" (8)

- फ्रेंच कंपनी का शासन-

सन 1764 ई. तक फ्रेंच कंपनी द्वारा मॉरीशस पर शासन किये जाने के बाद फ्रांस के सम्राट ने मॉरीशस पर शासन-सूत्र अपने हस्तक ले लिया। इतिहास निमाण का दौड म मॉरीशस द्वीप का महत्व इंग्लड, अमेरिका, डेनिश, फ्रांस आदि देशा का नजरा म बढ़ा। एक क्रांति का लहर समग्र विश्व म व्याप्त था। जिससे मॉरीशस के क्रांतिकारी भी इससे अछूते नहा रहे। मॉरीशस ने भी समानता, स्वतंत्रता और भाई चारे के स्वर का घोष करते हए फ्रांस से अपना समस्त नाता तोड़ लिया और लगभग सात-आठ वषा तक स्वतंत्र रूप से शासन सूत्र अपने हाथा म ले लिया, किंतु आथिक सत्ता उन गोरा के हाथा म थी इस वजह से उन्ह अधिक सफलता नहा मिलती है। अंग्रेजा और फ्रांसीसिया का भीषण युद्ध हआ। 3 दिसम्बर, 1810 ई. को अंग्रेजा को विजय प्राप्त हई। अंग्रेजा ने द्वीप पर

युनियन जैक फहरा दिया तथा द्वीप का नाम "इल द फ्रांस" हटाकर पुन: मॉरीशस कर दिया गया। इस संदभ म महत्वपूण बात कुछ इस प्रकार भी है- "अंग्रेजों की ओर से लडनेवाले भारतीय सैनिकों की वीरता का इतिहास है।" (9) इसके बाद भी अंग्रेज सेनापति अलबर क्रोबी ने भारतीय सिपाहियों को मॉरीशस म ठहरने नहीं दिया, ताकि इस बात का ज्वलंत प्रमाण रोज के रोज मॉरीशस वासियों को न मिल सके कि भारत के सहयोग से यह टापू जीता गया है।"(10)

इस प्रकार अरब पुतगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेजों ने इस द्वीप का उपयोग अपने-अपने ढंग से किया। अंग्रेज अंतिम शासक के रूप म रहे। अंग्रेजों के शासनकाल म एक नये इतिहास के युग का आरंभ हआ था। अंग्रेजों ने अपने शासन के प्रारंभिककाल म अप्रावास को बढ़ावा नहीं दिया और नही स्वयं बसने का इरादा किया, परंतु जब 1832 ई म ब्रिटिश-संसद ने पूरे विश्व म दास-प्रथा का अंत कर दिया, तब मॉरीशस के दास भी स्वतंत्र हो गये। फ्रांसीसीओं के कहने पर आथिक स्थिति को और बेहतर बनाने के लिए भारतीय कुली-मजदूरों को द्वीप म मंगाया। अरकाटियों के प्रलोभन और छलावे म आकर, भारतीय कुली-मजदूर शतबंदी-प्रथा के अंतगत जत्थे-के-जत्थे म, मॉरीशस द्वीप म सन1834 ई. म आए। मॉरीशस म इन भारतीय कुलियों कोप तरह-तरह की यातनाय मिलती थीं। "अन्याय और भ्रष्टाचार से बचने का प्रयत्न करने पर फ्रांसीसी लोग मजदूरों को कोड़ों से मारते थे। वे उंको जिंगा भी कराते थे। अथात् ऐसे मजदूर दोनों हाथों से दोनों कान पकड़कर, उठने-बैठने के लिए विवश किये जाते थे।" (11)

अभिमन्यु अनत ने मॉरीशस के इतिहास संदभ म भारतीय प्रवासियों की 150 वी वषगांठ पर वसंत पत्रिका म लिखा था – "इस देश का गूंगा इतिहास जानता है कि भारत से मजदूरों को किस तरह के प्रलोभन और छलावे के साथ यहां लाया गया था। जहाज म भेड-बकरों से भी बदत्तर स्थिति म उन्ह यात्रा करनी पड़ती थी। कोठियों म रहने के लिए उन्ह घर की जगह बाड़े दिये गये थे। खेतों म उनसे बेल से भी अधिक काम करवाया जाता था और कमर सीधा करते ही उन पर बांसों और कोड़ों की बौछार शुरु हो जाती थी | उनकी बस्ती म न तो दवा की व्यवस्था थी और न ही पठन-पाठन की रामायण के पाठ तक करने की इजाजत नहीं थी।

मालिकों के जुल्मों के साथ-साथ सरदारों के भी अत्याचार चलते थे। तीन चवन्नियों के रूपये से मजदूरों को चूप रह जाना पड़ता था। एक दिन कि गैरहाजिर पर दो दिन की तनख्वाह काट ली जाती थी। कोड़े भरे चावल और आटे से उन्ह गुजारा करना पड़ता था। एक ही घोती और फतुही वष भर पहननी पड़ती थी। पत्नी और बेटी-बहओं पर के बलात्कार को देखकर भी चूपी साथे रहना पड़ता था। दिन दहाड़े आत्महत्या होती रहती थी। कोई गले म रस्सी बांध पेड़ों की डालियों से झूल जाता था, तो कोई समंदर और नदियों म अपने शरीर को फक देता था। मजदूरों की सजाओं म एक सजा यह भी थी कि बगावत करने वाले मजदूर को किसी पेड़ से नंगे लटका दिया जाता था और तब तक उसके बदन पर ईख का रस-लेप दिया जाता था, जब तक लाल चींटी उस रस के स्वाद के साथ उस बंधे हए व्यक्ति के शरीर से सारे मांस को चाट नहीं जाती थी, तब तक उसकी लाश पर उसके परिवार को कोई अधिकार नहीं होता था। ईख की कोठियों म किसी लड़की का सुंदर होना उसके लिए सबसे बडा अभिशाप था।" (12)

मजदूरों का जीवन बड़े ही ददनाक हालत के साथ गुजर रहा था| इंसान को इंसान को तरह कहाँ रहने देते थे|

➢ डचों का आगमन

16 वीं शती के उतराध म यूरोप को एक अन्य जाति डच लोगों का प्रवेश हिंद महासागर म हआ। डच नाविकों ने पुतगाली नाविकों को सब जगह से खदेड़ना शुरु किया। पीटर बोथ का आगमन प्रसिद्ध डच नाविक जब सन 1620 ई. म यहां आया था, तब डचों का व्यवस्थित उपनिवेशी कारण नहीं हआ था, 'बेनाद-द- सफ्येर' ने अपनी कृति पाल और बिजिनी' म इसे 'कब्र को खाडी' का जिक्र किया है। 1623 ई. म टोमस हबट नामक अंग्रज ने अपनी मॉरीशस यात्रा पर लिखी थी। प्रथम किले का निमाण ग्रान पोट म 6 मई 1638 ई. म करवाया था।

डच इंडिया कंपनी ने गवनर गोयर को निम्नलिखित काम करने का आदेश दिया था-

"1 कीमती आबनूस लकडी का यूरोप म नियात करना

२. आमब्रेजी (तृणमणि) को खोज और उसका भी नियात करना।

3. तम्बाकू और अनाजों को खेती करना, जिससे 'द्वीपवासी आत्म निभर

बन सक।

4. पशु-पक्षी पालन करना, जिसे आगत डच जहाजों को मांस मिल सके।

5. द्वीप म खनिज पदार्थों को खोज करना।

6. वटेविया से डच रोगियों को यहां लाकर चिकित्सा करना।

7. ग्रान पोट म एक किले का निमाण करना।

8. अन्य जाति के जहाजों को द्वीप पर उतरने से रोकना।" (13)

गवनरवान–देर-स्तैल (1639-45) प्रथम बार सन1641ई.म मादेगास्कर से दासों को लाया था। उन्होंने एक मालगासी मुखिमा को लगभग 100 दासों के लिए (स्त्री-पुरुष) मुखियाने उन दासों को जब मांस लाने के लिए एक कसाई घर म भेजा। जैसे ही वे वहां पहंचे, मुखिया ने दरवाजा बंद कर लिया और चालीस दासों को पकड़कर जहाज पर भेज दिया। अन्य भागते दलों का पीछा करके जकड़ा गया और उन्ह भी जहाज पर चढ़ाया गया। डच मालिकों का दासों पर अत्याचार करना भी आम बात थी। सन 1658 ई. म जब डचों ने द्वीप को प्रथम बार त्यागा था। तब दो दास निजन द्वीप पर रह गए थे।

सन 1645 ई. तक देश म कोई सड़क नहीं, पगडंडियां थीं, इसी साल आबनूस लकड़ी ढ़ोने के लिए फ्लाफ तीन मिल लम्बी सड़क बनाई गई। सन् 1563 से सन् 1710 ई. के बीच डच लोग तीन बार मॉरीशस म

आये लेकिन टीक नहीं पाए। तब देश म चूहे और मक्खियों का प्रकोप था। तूफान बाढ़ और सूखे से उन्ह बहत परेशानी होती थी।

माईकल हेरिशन के मतानुसार- "पुतगालियों ने मॉरीशस को खोज करके ही त्याग दिया था और डच लोगों ने एक सौ वष के पश्चात इसे छोडा था।" एक अन्य इतिहासकार, इंग्राम ने कहा है कि" डच लोगों ने अपना आबनूस का काग दो सौ वष तक करने के पश्चात मॉरीशस को छोड़ा था।" (14) एक इतिहासकार ने डच शासन काल का मूल्यांकन करते हए कहा...."डच लोगों ने पहला काय व्यापार, दूसरा निदयता, तीसरा निकृष्ट काय संप्रदाय रखा और संस्कृति कहीं नहीं।" (15)

डच लोगों के जाने के पांच साल बाद, यह द्वीप फ्रेंचों के अधिकार म आ गया। सन1710 ई. से सन1764 ई तक 54 वष मॉरीशस म फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन चला था। इसके थोडे दिन बाद अंग्रेजों ने कब्जा जमाया। अंग्रेजों ने दक्षिण म रहनेवाले बाशिंदों म एक घोषणापत्र बांटा था, जिसम लिखा था... "फ्रेंच सत्ता अन्यायी तथा जुल्मी है, वे गुलामों को पशुवत मानते ह, अतएव उनको छोडकर हमारी न्यायी ब्रिटिश राज्यसत्ता को स्वीकार करो।" (16)

- **भारतीयों का आगमन**

'नेपोलियन को पराजय के तुरंत बाद से ब्रिटेन से दासप्रथा को समाप्त करने का अभिप्राय जोरों से चलाया गया। दासों के शुभचिंतक थे- विलियम बिल्बर फोस, उनके प्रबल आंदोलन से ब्रिटेन म सन1807 ईसवी म दासप्रथा का अंत हो गया और तब से ब्रिटिश जहाजों पर दासों को नहीं ले जाया सकता' (17)

काफी लम्बे संघष के बाद सन 1833 ई. म ब्रिटिश संसद ने एक प्रस्ताव पास करके दुनिया के समस्त उपनिवेशों मे दास प्रथा का अंत कर दिया था। इसके एक साल बाद सन1834 ई. म मॉरीशस म दासों को मुक्त कर दिया था। और उन्होंने ईख की खेती का काम करने का इंकार कर दिया। मिट्टी म काम करना, दासत्व का प्रतीक बन गया। उद्योग मालिकों के संकट बढ़ गये थे। अंग्रेजों का शासन भारत और मॉरीशस दोनों देशों म था। इसलिए अंग्रेजों को भारतीय मजदूरों की परिश्रमशीलता मालूम थी।

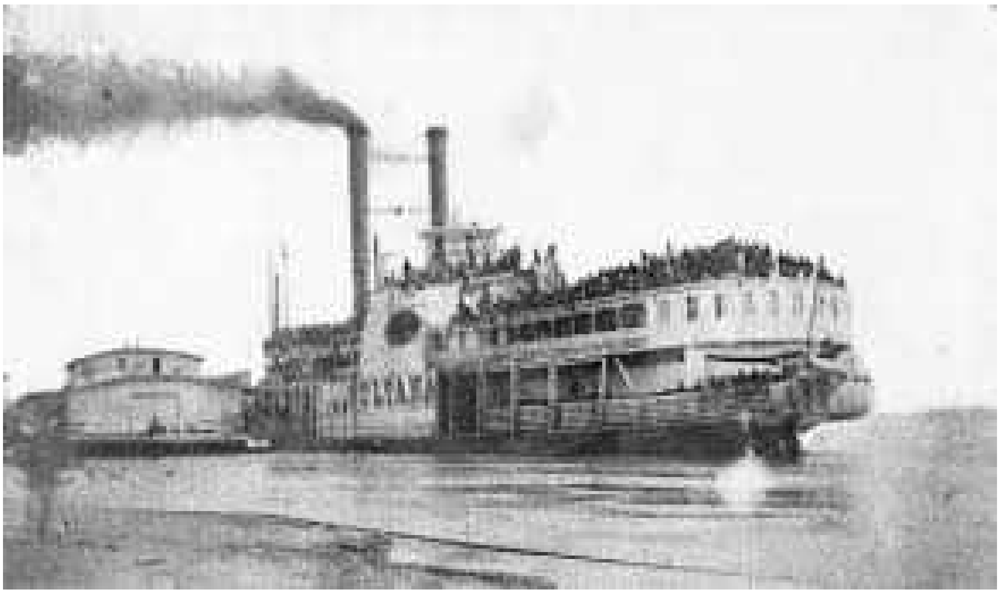

<u>प्रथम भारतीय अप्रवासी</u>

❖ **<u>इन्हीं सीढियों को चढ़के भारतीय को लाया गया था (अप्रवासी घाट)</u>**

❖ प्रथम गिरमिटिया ३६ लोग (अप्रवासी घाट)

“मॉरीशस म भारतीय मजदूरा का आगमन व्यवस्थित रूप से सन 1834 ई. म शुरु हआ “फ्रेंच काल म भारत के उन फ्रांसीसिया द्वारा शासित नगरा से काफा मात्रा म भारतीया को यहां लाया गया था। ये भारतीय मजदूर विशेषत: चंद्रनगर और पांडिचेरी के थे।“ (18)

सन1834 ई. मे शतबंद प्रथा के अंतगत दो जत्था म कोई 87 मजदूरा को लाया गया था। “मॉरीशस के युरोपियन जमादार लोग भारतीय कुली को लाने वाला एजटा को प्रत्येक कुली पर 120 रुपये देते थे, फिर भला क्या इतने धन के लालच म पडकर वे द्वीपा वाले झूठ-सच बोलकर सीधे-सादे लोगा को फंसाने का जाल रचते?: (19)

सन 1834 ई. से सन 1838 ई. तक कोई चालीस हजार मजदूरा को लाया जा चुका था, जिनके साथ दासा जैसा व्यवहार किया जाता था। शतबंद प्रथा को “गिरमिट –प्रथा” भी कहा जाता है। इस प्रथा के अनुसार प्रत्येक भारतीय प्रवासी को नौकरी करने से पहले एक सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर करना होता था।“ (20)

भारतीय प्रथम दशक के मजदूरा के साथ दासा जैसा बताव किया जाता था। छोटी-छोटी बाता को सजा सुनाई जाती थी। एक रस्सी का खाट, भोजन बनाने के लिए एक होडी के अलावा और कुछ भी नहा होता था

झोपडी म कोई खिड़की भी नहीं होती थी और उस पर कई लोग रहते थे। शतबंद मजदूरों को लाने के नियम बने लेकिन जहाज म पशुओं की तरह लाया जाता था। रास्ते म अनेक मजदूरों की मृत्यु भी हो जाती थी।

भारतीय मजदूरों के आगमन से "मॉरीशस को एक नया रूप मिला। रेमी ओलिए युग आया जो अभारतीय होते हए भी प्रवासियों के शुभ चिंतक थे।

❖ संघष और यात्रा

"यूरोप के सम्पन्न शासकों ने उपनिवेशों म हमेशा से अपने हितों के उद्देश्यों को सामने रखा था। उन्होंने चाय, चीनी और तम्बाकु के उत्पादनों को बढ़ाने के लिए ही दुनिया म दासत्व और अघ दासत्व की प्रथाओं को समयानुसार कायम किया था।"(21) अंग्रेजों के आधीन शासन व्यवस्था होने पर भी मॉरीशस के जमींदारों ने सरकार, न्यायाधीश और पुलिस आदि की सहायता से भारतीय मजदूरों का खूब शोषण किया था उन्ह सोने भी नहीं दिया था।

टापू पर मजदूरी करने आये लोग अधिक पढे लिखे नहीं थे इसीलिए भारतीय अप्रवासन के कोई आधी रात तक वे पिछडे ही रह गए थे और कोई विशेष साधन भी नहीं थे जिससे वो अपनी स्थिति को सुधार पाते। मॉरीशस म उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। मृतक को दफ़नाया जाता था दाह संस्कार भी इजाजत नहीं थी। मातृभाषा म शिक्षा का भी कोई प्रावधान नहीं था। उनके पास कुछ रामायण, महाभारत और गीता आदि ग्रंथों की प्रतियां पाई जाती थी धामिक और परम्परा से जुडते जरूर थे लेकिन उससे आथिक स्थिति म कोई सुधार नहीं कर पाते थे। अनेक दारूण यातनाओं के इतिहास के बाद मॉरीशस 12 माच 1968 को स्वतंत्र हआ। आजादी के बाद का इतिहास भारतीय अप्रवासियों के सतासीन होने का है। 12 माच 1992 कॉ मॉरीशस गणतंत्र देश बना।

❖ राजनीतिक स्थिति

मॉरीशस के इतिहास को देखे तो अरब, पुतगाल, डच आदि अनेक राजनीतिक सत्ता एवं शासन-व्यवस्था का इतना स्पष्ट नहीं है, लेकिन फ्रेंच काल का बडा महत्व है। "फ्रेंच शासन-काल म टापू का प्रशासनिक अधिकार ईने-गिरे-गोरों के हाथ म कद्रित था। यधपि 1810 ई. म मॉरीशस का प्रशासन अंग्रेजों के हाथों म चला आया था, तो भी प्रथम राज्यपाल फारकूह ने फ्रांसीसी शासन-व्यवस्था को कुछ समय तक ज्यों-का-त्यों बनाये रखा। अपने काय-काल म उन्होंने कोई संवैधानिक सुधार नहीं किया।"(22) सन् 1825 ई. म अंग्रेजों के द्वारा विभिन्न परिषदों का गठन होता रहा, किंतु उन म केवल गोरे लोगों को ही प्रतिनिधित्व दिया जाता रहा। 1832 ई. म सरकार की एक व्यापक परिषद गठित हई, जो 1886 तक चलती रही। 1886 ई. म अंग्रेज गवनर सर जॉन पोप हेनेसी ने इस परिषद का पुनगठन किया, जिसम द्वीप की जनता को व्यापक अधिकार देने की बात आई।

(गाँधी को मॉरीशस म भारतीया से मुलाकात)

सन 1910 ई. म गांधी द्वारा प्रद्दत चेतना, सन १९०७ ई. मणिलाल मगनलाल डॉक्टर के सतत प्रयासा, 1907 से ही अन्य राजनीतिक आंदोलना के प्रभावा तथा विभिन्न समय म आनेवाले भारतीय वकीला, लेखका, पत्रकारा, संन्यासिया आदि को प्रेरणाओं से द्वीप म सामाजिक-राजनीतिक चेतना का प्रसार होता है। "नवजागरण के चलते, चुनावा म पराजय के बावजूद सन1911, सन1921, तथा सन1925 तक भारतीय अप्रवासी परिषद के नामजद सदस्य चुने जाते रहे | इस काल-खंड म भारतीया द्वारा चुनाव एवं राजनीति म भाग लेना ही महत्वपूण था, परंतु सन1926 से स्थिति म परिवतन आया। डा. लाला, ग्रां. पोट से विजयी हए। वे भारतीया के प्रथम प्रतिनिधि निवाचित हए। यदपि उनके अन्य साथी चुनाव म हार गये थे, किंतु राजकुमार गजाधर चुनाव जीत गये थे। नामजदी का प्रक्रम तब भी चलता रहा।" (23) सन1935 म राजनीतिक द्रष्टि से एक नया आरंभ इसी वष डॉ. शिवसागर रामगुलाम का इंग्लड से शिक्षा लेकर आए और अप्रवासी भारतीया के मॉरीशस आगमन का शताब्दी समारोह भी मनाया गया। राजनीतिक स्वातंत्र्य को तेजी से गमाहट छाने लगी। मॉरीशस म मजदूर दल से जुडकर डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने राजनीतिक स्वातंत्र्य स्वर को आवाज़ दी, अन्य भारतीय लोगा को भी परिषद के सदस्य के रूप म चुना गया। "सन 1939 ई. मे प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल शिक्षाजन कर भारत से मॉरीशस लौटे। उन्हाने अपने भाषणा, लेखा, उपदेशा तथा व्याख्याना से सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण के साथ, स्वतंत्रता के अभियान को जनान्दोलना से जोडा। सत्याग्रही तरीके से प्रारंभ हए उनके धामिक-सांस्कृतिक जनान्दोलन ने एक सांस्कृतिक महायज्ञ का आयोजन किया। इसके कारण सन 1939 म दो महत्वपूण घटनाय घटी, एक तो गोरा के विरोध के बावजूद प्रो. विष्णुदयाल ने विशाल पैमाने पर एक महायज्ञ का आयोजन किया। यह पहला अवसर था। जब गोरा के आधिपत्य म रहनेवाले भारतीया ने कई इतना बडा धामिक आंदोलन किया। दूसरे गोरा को जमीन पर भारतीय

मजदूरों ने विशाल प्रदशन किया। प्रदशनकारियों पर गोली चलाई गई, जिसम अंजलि नामक भारतीय महिला मारी गयी, इन दोनों घटनाओं ने भारतीयों के मनोबल को बढ़ाया ।" (24)

सन 1947 म संविधान- संशोधन हआ। इसी संविधान के अंतगत सन1953,1959 म चुनाव हआ। उसम भारतीयों को बहमत मिला। डॉ. शिवसागर रामगुलाम मंत्री मंडल के प्रमुख बने। सन् 1963 म स्पष्ट बहमत न मिलने पर सन 1964 म सवदलीय सरकार बनी। उसके प्रधान डॉ. शिवसागर रामगुलाम बने। विधान परिषद अब विधान सभा बन गई। इतना ही नहीं, लेबर पार्टी के साथ ही, मुसलमानों के प्रतिनिधित्व के लिए मुस्लिम कमिटी तथा गोरों एवं क्रियोलों के प्रतिनिधित्व हेतु मॉरिशिया पार्टी का गठन हआ। पारस्परिक विभेद को देखते हए ब्रिटिश-सत्ता ने एक चाल चली। "सन 1965 म लंदन म हई संवैधानिक बातचीत म यह फैसला हआ कि अगर विधान-सभा म स्वतंत्रता संबंधी प्रस्ताव साधारण बहमत से पारित कर दिया गया, तो ब्रिटिश सरकार द्वीप को आजादी दे देगी।" (25)

स्वतंत्रता के हिमायती डॉ.सर शिवसागर रामगुलाम-

डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम ऐसी महान हस्ती थे, जिन्ह मॉरीशस का 'राष्ट्र निमाता' कहा जाता है। विलायत से डॉक्टरी उपाधि हासिल करके सन 1935 म उनका आगमन हआ था। पंडित जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, रवींद्रनाथ, डॉक्टर काउंडा तथा इल्यट आदि महापुरुषों के संपक म आकर उन्होंने मॉरीशस के लिए नई दिशाएं उपलब्ध करवाई। डॉ. रामगुलाम ने मॉरीशस की स्वाधीनता के लिए अपना प्रस्ताव पेश करते हए कहा था –"हम एक ऐसा ऐतिहासिक निणय लेनेवाले ह जिसका प्रभाव न केवल उन मॉरीशसवासियों के जीवन तथा आकांक्षाओं पर पडेगा जिन्होंने मतदान म भाग लिया था, वरन् इससे हमारी भावी पीढियां भी प्रभावित होंगी। म यह कहना चाहंगा कि जो महान् निणय हम करने जा रहे ह, वह उस लंबे तथा अकथनीय संघष की भी चरम परिणति है, जो उसी क्षण शुरू हो गया था, जब मॉरीशस को निवाचित मूलक संविधान प्रदान किया गया था..... महोदय यह बात याद रखी जाएगी कि यह संविधान सन1886 ईसवी म प्रदान किया गया था लेकिन वह मॉरीशस जैसे विकसित देश के लिए अपयाप्त होते हए भी इस देश की प्रतिक्रियावादी ताकतों ने उसका विरोध किया था। उस समय से ही मॉरीशस की जनता के लिए अधिक संवैधानिक स्वाधीनता प्राप्त कराने के प्रत्येक कदम का विरोध करने के लिए एक कठोर आंदोलन जारी रहा है। आज एक बार फिर इन

लोगों को हर प्रकार से स्वाधीनता का विरोध करनेवाले आंदोलन म सबसे आगे पाते ह.... परिवतन के इस विराट ज्वार से न तो हम अप्रभावित रह सकते ह और न विश्व के लोगों के ऐतिहासिक अभियान को ला सकते ह। हम यह स्वीकार करना चाहिए तथा समझना चाहिए कि पुरातन विश्व फिर कभी वापस न लौटने के समाप्त हो चुका है... हम स्वाधीनता से भयभीत नहीं होना चाहिए।" (26) डॉ. रामगुलाम सूझ बूझ के नेता थे स्वतंत्रता के बाद मॉरीशस की राजनीति म एक पड़ाव सा आ गया था। आजाद देश के सामने राजनीतिक दृष्टि से कई प्रमुख चुनौतियां थी। "बेकारों को नौकरी देना, 55% आजादी विरोधी मतदाताओं को देश के निमाण काय म लगाना, बुद्धिजीवी तथा पूंजीपतितों को देश छोडने से रोकना, देश के सामाजिक-आथिक और राजनीतिक ढांचे म स्थिरता लाना, निजी उद्यमीयों के संचालकों के मन से राष्ट्रीयकरण का भूत भगाना तथा यूरोपीय उद्योगपतियों द्वारा मॉरीशस म नये उद्योग खुलवाना आदि।" (27) बेहतर समाज और व्यवस्था के लिए राजनीति के पक्ष का सही दिशा म प्रयत्नशील रहना होगा।

➢ सांस्कृतिक-सामाजिक स्थिति

सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति-मॉरीशस–समाज म विभिन्न संस्कृतियां घुल-मिल गई है। एशिया, अफ्रिका और यूरोप के निवासी रहते ह। एक दूसरे पर प्रभाव दिखता है लेकिन पुतगाली समाज एवं संस्कृति का निशान नहीं है। डच संस्कृति भी नहिंवत है, देखा जा सकता है फ्रेंच-शासक- काल से ही उसकी सभ्यता एवं संस्कृति का, रहन-सहन, आचार-विचार का व्यापक प्रभाव पूरे द्वीप म अवश्य व्याप्त है। अंग्रेजों की सभ्यता-संस्कृति एवं सामाजिक काय-प्रणाली अपने ही ढंग की है। मॉरीशस म भारतीय प्रवासी लोगों ने भारतीय संस्कृति से प्रभावित हो गये ये भी सत्य है।

"चीनी समुदाय भी अपने तौर-तरीके से संचालित होते ह। उनका अपना समाज है और उनके रहन-सहन अचार-विचार के अपने तौर तरीके ह। प्रारंभिक काल खंड म अप्रवासी समाज 'एक चटैया' और 'एक जहाजी' भाई थे, किंतु कालांतर म, उनम भी परस्पर विभेद हआ। बाद म चलकर भारतीय समाज म हिंदूओं और मुसलमानों का ही विभेदी करण नहीं बढा, अपितु हिंदुओं कि पहचान मराठी हिंदू, गुजराती हिंदू, तमिल हिंदू, सनातनी हिंदू, वैश्य हिन्दू आदि के रूप म भी होने लगी" (28) मुसलमानों म भी इस्लामी, अहमदी, मुस्लिम, मुहम्मडस म विभेदीकरण बढने लगा। ईसाई चीनी म भी विभाज्य नीति होने लगी। सामाजिक उंच-नीच एवं जातीय उच्चता के अभियान का भाव-बोध विषैले नाग की तरह सदैव फन फैलाए हए है। सभी समाज की वैवाहिक की रीत-रिवाज, रीतियां अपने ही समाज की प्रथा के अनुसार संचालित होती है। विवाह, मृत्यु आदि संस्कार भी कमोबेश अपनी संस्कृति से जुड़े हए होते ह।

संस्कृति- भारतीय संस्कृति केवल मॉरीशस के चार दिवारों म ही नहीं बल्कि उनके जीवन म है वहा चाहे गोद भराई हो या बच्चे के जन्म का प्रसंग सोहर और ललना गाने का प्रचलन है। नामकरण, संस्कार, जनेउ बरछिया पद्धति हो या गृह योजना हो या अंतिम यात्रा का क्षण, सभी हिंदू भारतीय संस्कारों पालन आजा भी हो रहा है। शादी आधुनिक ढंग से होने पर भी भोजन तो आज भी केले के पत्तों पर पूडियों और साग- सब्जियों के होते ह। हल्दी तिलक की रसम भी निभाई जाती है- गांवों म सूखा भी पडे तो जमींदार खच वहन करके भी उसका

धान रोपन करवाही देता है। युवा पीढ़ी फ्रेंच और अंग्रेजी गाने सुनती है और गुनगुनाती है हिंदी, भोजपुरी उदू की गजल भी गा लेती है।

भारत म चाचा-चाची, मौसा-मौसी आज सभी अंकल और आंटी बन गये है पत्नी वाईफ और पति हसबड म परिवतित हो गये ह लेकिन यहां भारतीय संस्कृति म मिली आज तक 'मां' ही है, "मम्मी" नहीं बनी है। सुबह का अभिवादन 'गुडमोनिग' या रात को 'गुड नाईट' के बदले अभी भी 'नमस्ते' और 'प्र[illegible]' [illegible] 'ब्रह्मस्थान', '[illegible]', '[illegible]' है। शादी ब्याह म सांस्कृतिक मूल्य आज भी जीवित है क्योंकि गांव म एक शादी सब की जिम्मेदारी बन जाती है सब सहाय करते ह [illegible]

भारतीय संस्कृति यहां हर कण म है गांव म दोस्त जाम उठाते ह तो चीयस जे बदले ग्लास हाथ म उठाकर [illegible], फिर उसे हलक से गले के नीचे उतारते ह। दिवाली म मिट्टी के दिये जलाने की परंपरा [illegible]

❖ धामिक संस्कृति-

[illegible]-त्योंहार का रुझान थोडा कम नजर आता है। इसके लिए प्रश्न है कि क्या आज जो चारों [illegible] ह। उनकी संख्या देश की आधी आबादी से अधिक होती है, जिनम प्राय: [illegible] साडियों म होती ह। इस त्योंहार की तैयारी 15 दिन पहले से होती है भव्य कांवरों के साथ तथा भजन-[illegible] पदयात्रियों और देशभर के सकडों मंदिरों की शंख-ध्वनियों और घंटो की आवाज महाशिवरात्री को देश का सबसे भव्य त्योंहार बना देती है। मॉरीशस का यह एक मात्र त्योंहार है, जो अंतराष्ट्रीय रूप ले चुका है। आज दक्षिण [illegible]फ्र[illegible], रियूनियन द्वीप तथा अन्य स्थानों के भक्तजन शिवपूजन के लिए इस छोटे से टापू म पहंचते ह।" (29) रक्षाबंधन के त्योंहार के दिन यातायात बढ़ जाती है। गंगा स्नान के अवसर पर वहां के सौ जितने समुद्र तटों पर उसे गंगा स्वरूप मानकर स्नान किया जाता है। उस दिन मॉरीशस के सारे लोग गंगा मैया को पीयरी चढाने के लिए [illegible] ह। शिवपुत्र कातिक की पूजा, [illegible]

मॉरीशस की जन संख्या म लगभग 52% हिंदू है मॉरीशस की यात्रा अब भारतीयों के लिए एक भावनात्मक तीथयात्रा जैसी बन जाती है। बहसंस्कृतिवाद मॉरीशस द्वीप की एक विशेषता है।

❖ आथिक परिस्थिति

मॉरीशस की आथिक व्यवस्था के लिए चुकंदर और शकरा पर अवलम्बित है। इस द्वीप पर गन्ने की [illegible] क्योंकि संपूण अथव्यवस्था टिकी हई है इन्हीं खेती पर और अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष, [illegible]

[illegible] नहीं मिल पाई है। अथव्यवस्था म अधिक्तर गोरों का आधिपत्य रहा है। [illegible] "अथ संपन्नता के नाम पर नव उपभोक्तावादी संस्कृति का दुष्चक्र जारी है। लोग भौतिक चकाचौंध से ग्रस्त [illegible]-कभी द्वीप की अथव्यवस्था जजर हो [illegible], अनावश्यक की यात्राओं आदि से भी देश की [illegible]-व्यवस्था पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इन सबके कारण, जिन्ह लाभ मिलना चाहिए, उन्ह वह लाभ नहीं मिल रहा [illegible]" (30)

❖ **भाषिक स्थिति**

मॉरीशस की आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। मॉरीशस एक बहजातीय और बहभाषीय द्वीप है। सन1988 [illegible] 11 [illegible], [illegible] चीनी तथा बाकी अन्य है। आरंभिक अवस्था म सभी लोग अपनी भाषा, सभ्यता और संस्कृति के साथ आए थे। [illegible], [illegible]- अफ्रीकी देशों की भाषाएं एक जैसी दृष्टिगत होती है। [illegible] वहां आज भी जीवित है। साहित्य सजन मुख्य इन्हीं भाषाओं म हआ है, जो शासकों की भाषा रही या सांस्कृतिक आस्मिता संपन्न चेतन प्रवासियों की भाषा है। अब प्रत्येक भाषा के अलग-[illegible] निर्धारित नहीं की जा सकती क्योंकि प्रत्ये[illegible] चीनी पांच भाषाएं अपने वग म सीमित है। जबकि अंग्रेजी, फ्रें[illegible] अधिकांश वग प्रयोग करता है।

फ्रांसीसी और मोजाम्बिक अफ्रीकी लोगों की संपक भाषा थी, [illegible]-धीरे सारे मॉरीशस की संपक भाषा बन गई है। लेकिन वतमान की यह स्थिति है कि क्रियोली और भोजपुरी को छोड़कर सभी भाषाएं पढने लिखने के लिए सीखी जाती है। फ्रेंच भाषा प्राथमिक स्कूलों म अनिवाय रूप से सिखाई जाती है। भारत के मूल लोग हिंदू या [illegible] अपने घरों म भोजपुरी का प्रयोग करते है। तमिल, [illegible] आपस म संपक या व्यवहार के लिए भोजपुरी और क्रियोल का प्रयोग करते ह।

"भारत म स्वतंत्रता प्राप्ति के पूव मॉरीशस म स्थित यह थी कि भारतीय मूल के सभी मॉरिशसीयों की [illegible] ([illegible]) [illegible], किंतु भारत म स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वहां से आनेवालों म प्रांतीयता की भावना और भाषोन्माद उत्पन्न हआ है। फलस्वरूप अब हिंदी केवल हिंदी भाषा राज्यों से आए हए लोगों तक [illegible]" (31) "Hindu is the more popular… has a good chance of being chosen by a great number of Maturations"(32) सातव दशक तक हिंदी भाषा लोकप्रिय भाषा रही है। वहां भी उपनिवेशवादी षड्यंत्र भारत की ही तरह वहां भी [illegible]प्रश्न [illegible]लकर देश की एकता को विभक्त करने के लिए प्रयत्नशील है।

□□ □□□□□□ 11 □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ क्रि□□□, □ग्र□□, फ्रं□ □□ □□□□□□ □□□ भाषाओं के बोलनेवाली संख्या अधिक है। भाषा के भिन्नता के स्वरूप- □□श्र□, □□□□□□□□□ □-□□□□□□□□ फ्रं□', '□□□□□□□ क्रि□□□□' '□□□□□□□ □□□□□□' का विकास हआ है। इस प्रकार भाषाओं का प्रभाव पारस्परिक □□ □□

❖ क्रियोली-किरियोली

सबसे प्रचलित भाषाओं म क्रियोली भाषा का स्थान है लेकिन साहित्यिक दृष्टि निधन भाषा कह सकते ह। भाषा के विद्धानी ने इसे 'फ्रं□ □□ भ्रष्ट रू□' □□□□ Creole, a French potois is the lingua franca of the island □-□□□□□□□ □□□□□ □ The truth about Mauritius □□□□□ □□ □□ 'a sort of corrept grence. मत उद्धत किया है। कुछ विद्धान के अनुसार- "जो सव साधारण फ्रांसीसी और भोजपुरी की खिचड़ी।" (33) क्रि□□□ □□□: अफ्रीका से आये हए लोगी की मोजाम्बिक और मडागास्कर मूल के लोगी की भाषा है। "फ्रांसीसी अपने साथ फ्रेंच लाए और अफ्रीका मोजाम्बिक आदि देशी से जो दास यहां लाए गए उनके साथ उनकी क्रियोली भाषा आई। फ्रेंच और क्रियोली के मिश्रण से दोनी के ही रूपी म विकार आने लगा और दोनी ही ने मॉरीशस म एक मिश्रित रूप ग्रहण कर लिया। मॉरीशस की क्रियोली और दूसरे देशी की क्रियोली म काफी अंतर □□"(34) स्कूली म क्रियोली की शिक्षा नहीं दी जाती, □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □, और स्कूली म जो पाठ्यक्रम बन रहा है वहां मातृभाषा को स्थान देने का प्र□□□ □□□□ □□ □□□ □□

❖ फ्रेंच

मॉरीशस म फ्रेंच भी फ्रांस से भिन्न स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। सन1810 म मॉरीशस का शासन अंग्रेजी को सौंपते हए फ्रेंच शासकी ने भाषा को बनाए रखने की मांग की थी। मॉरीशस म ब्रिटिश शासनकाल म □□□□□□□: फ्रेंच की पढ़ाई होती रही है। यही कारण है कि आज भी फ्रेंच मॉरीशस की समृद्ध और सशक्त फ्रेंच □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□'□□□ □-□ □□□□□' □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□□ आदि ग्रंथ भी है। भारतीय ग्रंथ रामायण, गीता का फ्रेंच अनुवाद हआ है। सन1811 □□□1910 □□ 43 साहित्यक पुस्तक मिलने के संकेत ह। (35) □□□ 28 □□□□□ □ग्र□, 9 □□□□, 3 □□□□□ □ग्र□ □□ 2 □□□□□ संग्रह है। एक उपन्यास भी है। प्रमुख कवियी म लेओविल लोम □□ □□□□□ प्र□- □□□□ □□ □-□ □□□□□ □□ □□ 1911 के बाद तीव्र विकास हआ। इनम राबटहाट, □□□ □□□□, क्लेमाशारू और एवे नोर मामेत फ्रांस म भी सम्मानित हए। राबटहाट की 20 □□□ □□□□ □□□□□'□□□□ मॉरिशन फ्रेंच का सटिक उदाहरण है। इसम □□□□ मिश्रित भाषा है कि कुछ लोग इसे क्रियोली की प्रारंभिक कृति कह सकते है फ्रेंच के कुछ अन्य लेखक- □□□□□□, □□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□□, कामी दे रोविल उव रावा जां जाज प्रोस्पेर, □□□ □□□□ □□ □□□□ (स्त्री) □□□ □□'□□□□□□□□□□' □-□□□□ □□□□ □□□□□प्र□□□□ □ष्ट्र□□□ □□□□ □□

❖ **अंग्रेजी**

□□ 1810 से अभी तक अंग्रेजी मॉरीशस को राजभाषा है। 20 वों सदी के प्रारंभ म विश्व ने मॉरीशस को □□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□, □□ह, □□□□□, □□□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ग्रे□ □ो □□□□ □□□□ '□□□□टिव एन्ड मिसलेनियस वेसज' 1814 म प्रकाशित हई अब भी पत्र-□त्रि□□,□ □□□□व□, उपन्यास और बाल साहित्य को दृष्टि से मॉरीशस को अंग्रेजी भाषा है।

❖ **चीनी**

यशपाल ने अपने यात्रा विवरण म चीनियों को संख्या तीन प्रतिशत लिखी है। डेढ़ लाख चीनी वहां रहते ह। इनको भाषा सुरक्षित है। चीनी को कोई प्रचारक संस्था नहों ह । न तो वे सांस्कृतिक उद्देश्यों से यहां आये और □ प्र□त□ □□□□□ □□□□□, ये तो सिफ व्यापारिक दृष्टि से आये थे। चीनी मॉरीशस को एक सवथा साम्प्रदायिक □□□□ □□

❖ **उदू**

□□□स□□ □□□□□□□□□□□□□ को उदू भी भारतीय भाषाओं म से ही एक गिनी जाती थी। उदू और हिंदी म विभाजक रेखा कम थी। अधिकांश भारत से ही गये हए लोग प्रयोग करते है। उदू ने अगर किसी भाषा से शब्द ग्रहण किए है तो वह अंग्रेजी भाषा है।

❖ **तमिल**

मॉरीशस म भारत से प्रारंभ म जानेवालों म □□□□ □□□□-बोलनेवालों को संख्या थी, □□□□ □□□□त□ कम है। मॉरीशस तमिल फ्रेंच प्रभाव के कारण भारतीय तमिल को अपेक्षा अधिक कोमल ध्वनियों का विकास □□ □□□□1950 से इसको एक पंजीकृत प्रचारक संस्था '□□□□□ □□□□□□□□□' चल रही है। फ्रेंच पुस्तकों के □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□

❖ **तेलुगु**

मॉरीशस म गए हए आंध्रप्रदेश के लोग तेलुगु भाषा का प्रयोग कर रहे थे। आज भारतीय मूल के अन्य लोगों से संपक के लिए क्रियोली या भोजपुरी का इस्तेमाल कर रहे ह। सन1946 □ □□□□□□□ □□ प्र□□□□ □स□□ '□ध्र□□□□□□□' □□□□ प्र□□□ □□□□□ □□□-कभी कुछ प्रचारक इस भाषा का प्रयोग करते ह।

❖ **मराठी**

मॉरीशस को स्वाधीनता से पूव यह केवल एक घरेलू भाषा हआ करती थों ।

❖ **गुजराती**

गुजरात से बडी संख्या म आते व्यापारी प्रारंभ से ही मॉरीशस जाते रहे ह। मजदूर या [illegible] म नहीं गए जैसे अन्य भारतवंशियों को लेकर जाया गया। “[illegible], [illegible] सांस्कृतिक गरिमा सम्पन्न वग है। अन्य सांप्रदायिक मातृभाषाओं की अपेक्षा यह अधिक समृद्ध भाषा है। इसको बोलने वाले अधिकांश शिक्षित और सम्पन्न है।“ (36)

❖ **भोजपुरी**

[illegible] ‘[illegible] तो वे हिंदी म बात करते थे। उनके पास न पुस्तक न अखबार और न ही विधा प्राप्त करने के लिए सामग्रियां। [illegible] र बर्तो की मार खाने के बाद सब कुछ भूल जाते [illegible] और जो थोड़ा बहत याद रहता था तो गुनगुना लेते थे। आगे चलकर उनके बच्चे हिंदी के साथ फ्रेंच शब्द जोडने लगे। यदि हम कहगे कि टूकान जाओ और एक डिब्बा मटर लाओ तो आम लोग न समझगे। हम [illegible]: [illegible]”(37) मॉरीशस म भोजपुरी की तीनों परम्पराएं [illegible], लोककथाओं और कहावतों का रोजमरा के जीवन म प्रयोग मिलता है। नई कथाओं-[illegible], [illegible] “[illegible] [illegible]”

Hindi the more popular language has a good chance being chosen by a great number of Mauritius.

मॉरीशस म प्रारंभिक काल भोजपुरी म 1834 [illegible] 1900 [illegible], आल्हा और लोकगीतों के संरक्षित रखने [illegible], [illegible] हिंदुस्तानी पत्र और तौत-मैना आदि किस्सों की एक मात्र दुकान पोट लुई म थी। साहित्य का प्रारंभिक काल का ‘[illegible]’ प्र[illegible] (1935 [illegible]) इस युग म नई चेतना और जागरण स्वाधीनता के बाद खड़ी बोली प्रबल हो गई [illegible] हावतों का प्रयोग सभी खड़ी बोली रचनाओं म पाए जाते ह।

➢ **खड़ी बोली**

[illegible] 20 वीं सदी के प्रथम दशक से इस भाषा का वहां प्रचार हआ। मॉरीशस का हिंदी [illegible] 1968 [illegible] 1988 तक सारा साहित्य और श्रेष्ठ खड़ीबोली म ही हआ है।भाषाओं के सम्मिश्रण का प्रभाव वहां की संस्कृति पर भी दृष्टिगत होता [illegible]

निष्कष

[illegible] 184 साल वष पूव अनपढ़ एवं कम पढ़े लिखे निम्न वग के भारतीयों को बहला-फुसलाकर नौकरी देने के लालच म भारत से बाहर मॉरीशस सुरीनाम पीजी गया ना तो देखो रे नैना आदि देशों म लेकर गए थे महीनों तक चलने वाली जहाजों की यात्रा करने के बाद वह लोग पहंचे थे भारत से ह[illegible]
[illegible]

मजदूरों के पास खजाने के रूप म अगर कुछ था तो वह रामचरितमानस हनुमान चालीसा सत्यनारायण की कथा [illegible].

मॉरीशस की सिटी भारत म शिव की संख्या के अनुपात की दृष्टि से महत्वपूण है. बड़ी संख्या म भारत से मजदूर के रूप म खेतों म काम करने के लिए लाए गए. इन मजदूरों को एग्रीमट के अंतगत लाया जाता था एग्रीमट [illegible]. 1834 [illegible] 19 [illegible] की भावना तथा धम संस्कृति म अपनी अखंड आस्था के कारण इन्होंने रामायण और हनुमान चालीसा गाकर [illegible]

बीसवीं शताब्दी का आरंभ भारतीय मजदूरों के लिए जागरण का सूय बनकर आया महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से जब भारत लौट रहे थे तो 1901 को उनका जहाज नौशेरा मॉरीशस म रुका और 11 [illegible]शस के लोगों को वरदान के रूप म साबित हआ महात्मा गांधी ने मॉरीशस के भारतीयों की सहायता के लिए बैरिस्टर मणिलाल डॉक्टर को भेजो उन्होंने भारतीयों के मनोबल को बढ़ाया 1999 म हिंदुस्तानी पत्र निकाला पहले गुजराती और अंग्रेजी म प्रकाशित हआ और बाद म अंग्रेजी [illegible] निकाला मणिलाल डॉक्टर के आने और उनके प्रश्नों का एक सफल प्रयोग और उसका परिणाम यह हआ कि धीरे-धीरे देश के अनेक भागों म हिंदी शिक्षा के कद्र खुलने लगे 1920 [illegible] 1925 [illegible] 1926 [illegible] 1935 म हिंदी प्रचारि[illegible] पाठशाला में आंशिक रूप से पहंची 15 [illegible] 1954 म मॉरीशस की पाठशाला म प्रतिदिन हिंदी की कक्षाएं आरंभ हो गई मॉरीशस की स्वाधीनता के बाद हिंदी का विकास तेजी से हआ अब देश भर की प्राथमिक पाठशाला हं म हिंदी पढ़ाई जा रही है सरकारी और प्राइवेट माध्यमिक कॉलेजों म भी हिंदी पढ़ाई जा रही है महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस विश्वविद्यालय के साथ हिंदी म डिप्लोमा बीए ऑनस ज्वाइंट ऑनर और आदि की कक्षाएं संचालित करता है सांस्कृतिक जागरण हिंदी महत्वपूण भूमिका नि[illegible] हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई. संघष की गाथा के रूप म अनेक साहित्य की रचना हई. [illegible], [illegible].भारतियों का मनोबल बढाने का काय किया.

:- संदभ सूची :-

1. मॉरीशस म भारतीयों का इतिहास :□□. □□□□□ □□□: □.2

2 □□□□□ □□ □□□□□: श्री प्र□□□□ □□□□□ –□.15

3. □□□□□ □□ □□□□□: श्री प्र□□□□ □□□□□ :□.13

4. Mauritius –its people, its cultures- page. 1, by A. Unnuth. Dr. Iss Asgarally Sydney Selvon)

5. Encyclopedia Britanica- Vol-11, page No. 715

6. Mauritius its people, its cultures page No. 2 by- A Unnuth, Dr ISSA Asgarally, Sydney Selvon

7. □□□□□ □□ □□□□□: श्री प्र□□□□ □□□□□ :□.24

8. मॉरीशस म भारतीयों का इतिहास :□□. □□□□□□□: □.4

9. मॉरीशस म भारतीयों का इतिहास : □□. □□□□□□□:□.5

10. □□□□□ □□ □□□□□: प्र□□□□ □□□□□ :□.49

11. □□□□□ □□ □□□□□: श्री मुनीन्द्र नाथ वमा :□ष्ठ: 39

12. □□□□त्रि□□ : श्री अभिमन्यु अनत : □□-6 □□- □□, □.4

13. □□□□□ □□ □□□□□ :श्री प्र□□□□ □□□□□ :□.33-34

14. □□□□□ □□ □□□□□ :श्री प्रहलाद रामशरण :□.37

15. □□□□□ □□ □□□□□ :श्री प्र□□□□ □□□□□ :□.38

16. □□□□□ □□ □□□□□ :श्री प्रहलाद रामशरण :□.60

17. After I may 1807 no British ship was permitted to clear port with a Cargo of Slaves, and from March 1808 no slave could be landed in a British colony from any ship. What had been a legitimate branch of commerce was now clandestine Smuggling, a breach of

law. Further legislation passed in 1811 made the traffic a felony, punishable with transportation, - A New System of felony- Hugh Tinker.

18. Under French occupation it operas that most Indians are imported from the south of India… Slaves from Bengal are reported to have been in Mauritius prior to 1758 and their descendants were to be found in 1827. During the early years of immigration shipments as having embarked for Mauritius between 7th August 1837 to 30th July 1838 – A New system of slavery- Hugh Tinker

19. □□□□□- □□□□ (□□□□□) □□त्र-स□□□ □□□□□□□□□□□ □ □□द्ध□

20. □□□□□ □□ □□□□□ :प्र□□□□ □□□□□ :□□79

21. □□1919 □□□□ □ □□बनारसीदास चतुवदी द्वारा लिखित ग्रंथ 'प्र□□□ □□□□□□□' □□□□)

22. □□□□□ □□ □□□□□: श्री प्रहलाद रामशरण :□□85-86

23. □□□□□ □ □□□□ □□□□त□ □□ □द्भ□ □□ □□□□□: □□. श□□□□ □□□□□:□□5

24. □□□□□ □□□ □□ □□□□□ :श्री जितद्र मित्तल : □□103

25. □□□□□ □□□ □□ □□□□□ :श्री जितद्र मित्तल: □□105

26. □□□□□ □□ □□□□□ : प्र□□□□ □□□□□: □□141-142

27. □□□□□ □□ □□□□□: प्र□□□□ □□□□□: □□135

28. □□□□□ □ □□□□ □□□□त□ □□ □द्भ□ □□ □□□□□: □□. श□□□□ □□□□□: □□7

29. प्रे□□: □□□□□□□ □□□ □□□□ : □□□□त□□ □□□□□□□□ □त्रे□□: □□ -16- □प्रै□-□□-2013 □□□□ □रु□ □□□□□ : □□36

30. □□□□□ □ □□दी साहित्य का उद्भव और विकास: □□. श□□□□ □□□□□: □□9

31: □□□ ग्रं□□□□□□□ द्वीप तथा वहां को भाषाओं का सवक्षण : □□. □□श्री □□□: □□270

32 □□□□□ □□ □□□□ □□□□त□: □□. □□□: □□3

33.□□□म□□□: ज्वालामुखी से उभरताहआ द्वीप: □□□द्र □□स□□: 1976 □□□म□□ : □□71

34.मॉरीशस द्वीप और उसको भाषाओं का सवक्षण: □□. □□श्री □□□ : □□□ग्रं□ □□34

35.बिब्लियोग्राफी आग मॉरीशस : ए तुस्से एन्ड एच आदोल्फ (□□□□□1956)

36.'□□ □□□□□ □□ □□□' नामक एक एकांकी गुजराती समाज के बच्चों के द्वारा प्रस्तुत की ग□ □□□ □□ □□□ □ी –पुष्टि भानुमति नागदान एक पत्र म करती है।

37. □□□□□□□□□□□□□□□□ the truth about Mauritius: □.□183